# शिव गरिमा

काशी शिवपुरी आश्रम की मासिक ई-पत्रिका
वर्ष–2, अंक–10, माह– अक्टूबर 2024

आशीर्वाद : प.पू. परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद, राजयोगी प्रभु बा
प्रकाशक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट, ईंटालीखेड़ा

# महोत्सव की उपलब्धि

हमारी शक्तिपात परंपरा बड़ी पुरानी है। इसमें जितने भी सद्गुरु हुए हैं वे सभी अद्भुत क्षमतावान हुए हैं। उनके लिए साधकों का अति सम्मान व प्रेम रहा है। वही रिवाज आज तक चल रहा है। जब साधकों ने बार-बार निवेदन किया कि मेरा सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव आयोजित करने की प्रबल इच्छा है तो मुझे लगा कि यह कहीं प्रशंसा का आयोजन न बनकर रह जाए। इसलिए हिचकती रही। जब त्रिपदी परिवार के प्रमुख पूज्य बाबा महाराज ने इसके लिए तार्किक ढंग से आग्रह किया व बताया कि यह उत्सव ना होकर एक अनुष्ठान है, तो मैंने भी सहमति दे दी। अनुष्ठान तो सद्गुरुकृपा से अच्छा हो ही जाएगा पर इस अनुष्ठान का फलागम क्या होगा?

यदि इस महोत्सव के बाद सभी साधक नियमित साधन की मानसिकता बनाकर वैसा संकल्प करते हैं तो इसकी सफलता है।इस अनुष्ठान के बाद गुरु परंपरा के प्रति समझ, कुंडलिनी शक्ति की विकास के प्रयास अधिक गहरे हों तो इस महोत्सव की उपलब्धि है। हमारा वासुदेव कुटुंब जिन आधारों पर खड़ा है उसका प्रमुख स्तंभ है परस्पर प्रेम। यदि इस अनुष्ठान से साधकों में प्रेम बढ़ता है तो उपलब्धि है। मेरी आध्यात्मिक यात्रा में अनेक साधकों को गुरुकृपा से शक्तिपात साधन की दीक्षा मिली है। यदि वे सभी साधक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष इस अनुष्ठान से जुड़ सकें तो महोत्सव की उपलब्धि है। आशा है मेरे मार्ग के सभी ट्रस्टी, केंद्र संचालक व साधकगण इन बातों को दिल में रखकर आयोजन में जुटेंगे। सभी को सफलता के लिए आशीर्वाद। ।॥卐॥

आपकी अपनी प्रभु बा

## सहज अभिव्यक्ति

संपादकीय

# सद्गुरु का संसार

सदगुरु और हममें क्या समानताएं हैं और क्या अंतर हैं? समानताओं को देखें तो वह भी पंचभूतों से बने भौतिक शरीर में ही है और हम भी। वह भी हमारे जैसा ही दिखता और आसपास खड़ा है। पर जरा गौर से देखें अंतर बहुत भारी है। सद्गुरु प्रथम दृष्टया भले ही हमारे जैसा ही लगता है पर ऐसा है नहीं। वह शरीर में दृष्टिगत होता है पर प्रतिपल शरीर से परे की यात्रा करता है। शरीर को उसने साधकों, शिष्यों के मोह को बनाए रखने के लिए संभाल रखा है वरना वह तो कायातीत है, देह से परे है। लगता यही है कि वह भी हमारी तरह खाता-पीता, बोलता व क्रियाएं करता है परंतु हम ना तो अपनी परतंत्रता को जान पाते हैं और न ही सद्गुरु की स्वतंत्रता का अनुभव कर पाते हैं। सद्गुरु देह में है पर देह की बेड़ियां उसे छू भी नहीं गई हैं। वह हमारे जैसा ही व्यवहार करता दिखता है पर उसके भीतर एक अलग ही दुनिया है। उस दुनिया का वह एकमात्र बादशाह है। वह अपना स्वामी स्वयं है तथा उसकी सत्ता ही उसे प्रकाशित व संचालित करती है।

वह भी हमारी तरह दीक्षित है पर उसने गुरु तत्व को अपने भीतर बोया व सींचा है। वह उस फुलवारी की सुगंध में मगन रहता है। उसके साधन जितने बाह्य हैं उससे कई गुना भीतर हैं। वह हमारे आसपास प्रत्यक्ष भी है और अप्रत्यक्ष भी खड़ा मिलता है। पर हम क्या समझें कि वह क्यों खड़ा है? वह शायद इसलिए खड़ा है कि साधक को संबल रहे, यात्रा का नंदादीप दिखता रहे, कैलाश की चोटी आंखों से ओझल ना हो। वह साधकहित के लिए अपने निजत्व में से समय लगाकर साथ खड़ा होता है। हम गलतफहमी से यह समझते हैं कि उसे हमारी जरूरत है। नहीं, नहीं उसे तो हमारे कल्याण की जरूरत है। इसलिए जो दिखे उसे ही सत्य ना मानें। सत्य की जितनी परतें साधक खोलता है सद्गुरु की आंतरिक प्रसन्नता उतनी ही बढ़ती जाती है। वह प्रेरित करता है, बुलाता है इसलिए साथ-साथ दिखाई देता है। वह अपने संकल्प को पूरा करने के लिए इस लौकिक रूप में है वरना उसका तो एक अलग ही संसार है। ॥ 卐 ॥

– स्वामी गुरुराज

परमपूज्य परमहंस स्वामी सुगंधेश्वरानंद राजयोगी प्रभु बा एक ऐसा नाम है जो प्रचार प्रसार की दुनिया से भले दूर है पर साधना में मशहूर है। प्रभु बा का मुख्य आश्रम काशी शिवपुरी, ईंटालीखेड़ा, जिला सलूंबर, राजस्थान में है। प्रभु बा दत्त परंपरा की आध्यात्मिक धारा को पुष्ट करते हुए गुरु परंपरा के संवाहक हैं। राजाधिराज योगिराज श्री सद्गुरु गुलवणी जी महाराज (पुणे, महाराष्ट्र) से दीक्षित होकर आपने अपनी वह यात्रा प्रारंभ की जो किसी भी मानव का सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य होता है। प्रभु बा की साधना पद्धति परंपरागत कर्मकांड, पूजा, अनुष्ठान के साथ-साथ भीतरी शक्ति के उदय के लिए ध्यान की है। जप के माध्यम से शारीरिक शुचिता का आधार तैयार कर आप ध्यान के शीर्ष तक साधकों को ले जाने में समर्थ हैं। करीब 50 वर्ष पूर्व आपने सामान्य गृहिणी के रूप में अपने सद्गुरु से ध्यान मार्ग की दीक्षा ली थी। ध्यान में गहरा उतरने की सहज वृत्ति के कारण आपको एकाधिक बार समाधि उपलब्ध हुई है। एक बार तो 21 दिन की समाधि भी लगी है। इसके बाद तो नव चेतना एवं कायाकल्प होकर आप परमहंस अवस्था को प्राप्त हो गए हैं। सद्गुरु के प्रति निष्ठा, विश्वास, आस्था तथा उनकी आज्ञा व अनुशासन में रहने का पर्यायवाची नाम है प्रभु बा। ध्यान में ही दादा गुरु परमपूज्य परमहंस श्री वासुदेवानंद सरस्वती टेंबे स्वामी महाराज द्वारा आपको नाम जप का आदेश मिला। तब से गत 30 वर्षों से आप

स्थान-स्थान पर अखंड नाम जप साप्ताहिकी के माध्यम से प्रभु नाम संकीर्तन का प्रसार कर रहे हैं। करीब 30 वर्ष पूर्व अपने सद्गुरु के ध्यान में मिले निर्देश से ही परमपूज्य शिवोम् तीर्थ स्वामी महाराज (देवास, मध्य प्रदेश) से संन्यास दीक्षा ग्रहण की है। संन्यास दीक्षा के बाद आपका जीवन ध्यान व शक्तिपात परंपरा को समृद्ध करने में ही समर्पित हो गया है। आपने हजारों साधकों को शक्तिपात दीक्षा देकर उनकी कुंडलिनी शक्ति को जागृत किया है। सहज, सरल व नियमित ध्यान के द्वारा आप साधकों को आनंदमय बनाने के लिए प्रयासरत हैं। प्रभु बा का मानना है कि कुंडलिनी साक्षात् शक्ति स्वरूपा है। यह मूलाधार पर कुंडली मार कर निष्क्रिय अवस्था में प्रत्येक मानव में स्थित है। इसे जगाया जा सके तो यह उर्ध्वमुखी होकर क्रमशः मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा आदि चक्रों का भेदन करते हुए सहस्रार तक जा सकती है। सहस्रार साक्षात् शिव है। शक्ति की भी शिव से मिलने की व्याकुलता रहती है पर उचित साधन तथा सही मार्गदर्शन के अभाव में व्यक्ति इस उपलब्धि को नहीं पा सकता है। इसलिए अनुभवी सद्गुरु अपनी शक्ति से उस सुषुप्त कुंडली को जागृत करके ध्यान द्वारा उर्ध्वयात्रा के लिए अनुकूलन कर देता है। नियमित ध्यान से शिव शक्ति के मिलन का अवसर आता है और वही सच्चा आनंद है उसी को चिदानंद, परमानंद आदि शब्दों से नामित किया गया है। उस आनंद की प्राप्ति के बाद समस्त दुर्गुणों की विलुप्ति और सभी सद्गुणों का जागरण हो जाता है। इस मार्ग के प्रचार-प्रसार के लिए प्रभु बा ने देश-विदेश में अनेक केंद्र स्थापित किए हैं। केंद्र यानी शक्ति जागरण के स्थल हैं जहां सुविधानुसार स्थानीय साधक साधना करते हैं। कुछ स्थानों पर आश्रम भी निर्मित हुए हैं ताकि आवासीय व्यवस्था के साथ साधना हो सके। प्रभु बा ने जप व ध्यान के द्वारा सुगंध पथ बनाया है। इस पथ का पथिक अपने सांसारिक कर्तव्यों का पालन करते हुए भी आध्यात्मिक यात्रा का यात्री बन

सकता है। अध्यात्म के साथ-साथ पारिवारिक, मानसिक व अन्य प्रकार की विषमताओं को भी ध्यान, जप व अनुष्ठान के माध्यम से दूर किया जाने की व्यवस्था भी प्रभु बा ने प्रदान की है। समाज सेवा, वंचितों के लिए सहयोग तथा चिकित्सकीय सेवाओं के लिए भी प्रभु बा ने अपने आश्रमों के द्वार खोल रखे हैं। सच तो यह है कि इस लोक व उस लोक को साधने के लिए जो सेतु है या हो सकता है उसे प्रभु बा का आध्यात्मिक मार्ग कहा जा सकता है।

ऐसे विलक्षण सद्गुरु परमहंस राजयोगी प्रभु बा के जीवन में 1008 पूर्णिमा दर्शन का योग बन रहा है। इस अवसर को 'सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव' के रूप में साधक परिवार यानी वासुदेव कुटुंब आयोजित कर रहा है। इस आयोजन का मुख्य समारोह 15 नवंबर 2024 को होगा। इससे पूर्व 7 नवंबर 2024 से अखंड नाम जप साप्ताहिकी, शतचंडी, शतरुद्री, दत्त आदि प्रकार के यज्ञ संपन्न होंगे। देव दीपावली के पावन पर्व पर आयोजित इस महोत्सव में दीपमाल भी ज्योतित होगी। इसके अलावा संत-समागम, आध्यात्मिक व सांस्कृतिक आयोजन भी रहेंगे। इस संपूर्ण अनुष्ठान का उद्देश्य है जिस सद्गुरु परंपरा ने हमें दीर्घकाल तक सदेह सद्गुरु सन्निधि प्रदान की है उसका आभार ज्ञापन करना। साथ ही प्रभु बा के आगामी जीवन को दीर्घायु व स्वास्थ्य बनाए रखने की कामना भी करना है। 'सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव' के लिए प्रत्येक साधक ने यह संकल्प लिया है कि 'मेरे सद्गुरु, मेरा उत्सव, मेरी जिम्मेदारी।' प्रभु बा रूपी अद्भुत सुगंध के कण सर्वत्र लोकमंगल करें ऐसी शुभाशा है। ॥ 卐 ॥

# पाथेय-प्रसाद

## प्रभु बा का अनुभव

## गुरुदेव ने सिखाया

जब स्वामी महाराज ने येऊर में साप्ताहिकी सत्संग का आदेश दिया तब ना तो साप्ताहिकी के बारे में कोई ज्यादा जानकारी थी और ना विधि का ज्ञान। फिर भी सद्गुरु परंपरा का आदेश है तो सब ठीक ही होगा इस भाव से साप्ताहिकी यात्रा प्रारंभ की। उस चातुर्मास में सात साप्ताहिकियां पूरी करनी थी इसलिए रुकने का प्रश्न ही नहीं था। कुछ परिचित व कुछ अपरिचित स्थानों पर वे साप्ताहिकियां संपन्न हुईं। कुछ स्थानों पर तो किसी के सुझाने से भी पहुंच गए । ऐसी ही एक साप्ताहिकी मेनार, जिला उदयपुर में हुई। छोटा सा गांव था पर सभी ग्रामवासी बड़े श्रद्धालु थे। अच्छा स्वागत हुआ व हर समय बड़ी संख्या में लोगों का जमावड़ा रहता था। रोज घर-घर दूध पीने के लिए निमंत्रण मिलता था। वहां एक शिव मंदिर बन ही रहा था और उसकी प्राण प्रतिष्ठा होनी थी। इसी मंदिर में साप्ताहिकी रखी थी । हमारा निवास गांव में था और मंदिर थोड़ा दूर था। रात को सत्संग के बाद मंदिर में ठहरने की व्यवस्था न होने से गांव में जाना पड़ता था। साप्ताहिकी में मूल ध्यान यह रखा जाना था कि नाम जप अखंड रहे। साथ में साधक तो ज्यादा थे नहीं अतः ग्रामवासियों का

ही जप में सहयोग लेना था। वे सब नाम जप के तो श्रद्धालु थे पर अखंड जप उनका स्वभाव नहीं था। एक रात को हम मंदिर से लौट आए तब मैंने व्यवस्थापकों से पूछा-पीछे जप कौन करेंगे? उत्तर मिला-बहुत लड़के हैं, वे कर लेंगे। फिर भी मुझे रात भर चिंता ही रही। रात यूं ही गुजर गई। सुबह ध्यान में गुरुदेव के दर्शन हुए। उन्होंने कहा-सुगंधा, घबराना नहीं। तुम्हारी चिंता थी कि जप खंडित ना हो पर जो जाप कर रहे थे वे पूरी जिम्मेदारी नहीं निभा पा रहे थे तो मैं स्वयं शिव मंदिर में रात भर जप करता रहा। जप अखंड रहा पर आपको अपने संकल्प लेने के बाद यूं बिना सोचे समझे विश्वास नहीं करना है। इसके बाद तो मुझे पश्चाताप होने लगा कि मेरी लापरवाही से गुरुदेव को देह धारण करके जप करने आना पड़ा। मेरी आंखों से गंगा जमुना बह चली। गुरुदेव ने आश्वस्त किया व आगे सावधान रहने को कहा। इसके बाद कभी भी मैंने लापरवाही नहीं की। मैंने क्षमा मांगी तो मुझे ध्यान में गुरुदेव शिवलिंग पर बैठे जप करते दिखे। धन्य हैं मेरे गुरुदेव जो अपनी शिष्या के संकल्प को साकार करने के लिए क्या-क्या नहीं करते हैं?। ॥卐॥

# ध्यान-योग

परमपूज्य परमहंस राजयोगी प्रभु बा ने ध्यान योग व कुंडलिनी योग विषय अपने अनुभव अनेक बार 'वासुदेव कुटुंब' के साधकों के समक्ष सरल भाषा में करुणा करके प्रकट किए हैं। आप हर एक साधक से यही कहते हैं कि अपने दिन भर के 24 घंटे में से 2 घंटे ध्यान साधना के माध्यम से शक्ति जागरण में लगे। आपका कहना है कि हमारे शरीर में 72000 नाड़ियां हैं, कुंडलिनी शक्ति सबसे पहले उनके शुद्धिकरण का कार्य करती है। शुद्धिकरण के समय जब शरीर में कहीं रोग या विकार होता है तो वह शक्ति वहीं थम जाती है और रोग या विकार का निवारण करके ही आगे बढ़ती है। शक्ति का कार्य अनवरत रात दिन चलता है। जब हम ध्यान करते हैं तो इसके कार्य की तीव्रता बढ़ जाती है यही कारण है कि शक्तिपात से कई असाध्य रोग भी कभी दूर हो जाते हैं। ध्यान साधना का प्रभाव हमारे अंतर्मन पर भी पड़ता है। मनुष्य का मन एक दर्पण की तरह होता है कई वर्षों के संस्कार

और कर्मों के प्रभाव में अशुद्धता की परतें एक के ऊपर एक जमा होती जाती है जिसकी वजह से मन मलीन हो जाता है। ध्यान से हमारे मन के ऊपर जमी अशुद्धता धीरे-धीरे हटने लगती है। इस प्रक्रिया को हम हमारे अंतर्मन का शुद्धिकरण कहते हैं। अंतर्मन स्वच्छ होते ही ध्यान के आंतरिक अनुभवों की शुरुआत होती है हम इसे अंतर या भीतर की यात्रा का आरंभ भी कह सकते हैं। कुंडलिनी योग के माध्यम से हम सद्गुरु द्वारा सुझाए गए सन्मार्ग पर, सुगंध पथ पर आत्मविश्वासपूर्वक प्रयाण कर सकते हैं। हम प्रयास तो करें ही, अभ्यास भी जारी रखें ही, साधन की नियमितता भी साधें ही, किंतु यह अवश्य स्मरण रहे कि ऐसी आध्यात्मिक उपलब्धियां पाने का सरल सा तौर तरीका है सद्गुरु कृपा। यहां यह भी सत्य है कि सद्गुरु हमेशा सद् शिष्य की तलाश में रहता है। हमें सद्गुरु को खोजना नहीं है वही हमें खोजते हैं। हम जितने तैयार हैं उतना ही गहरे जाकर वे हममें हमारे अस्तित्व को, संभावनाओं को, पात्रता को व प्यास को खोजते हैं। हम तो उनकी खोज के लिए केवल प्रस्तुत होते हैं। उन अवसरों की खोज साधक को करनी है जिनमें सद्गुरु की कृपादृष्टि और स्पर्श का आशीर्वाद निरंतर बरसता रहे। संपर्क और मिलना-जुलना तथा उत्सवों आदि में सद्गुरु को नमन करना एक बात है और परस्पर की खोज दूसरी व मुख्य बात है। हालांकि दोनों ही प्रकार के कार्य मुख्यतः तो सद्गुरु के ही जिम्मे हैं। हमें तो बस उनका आज्ञानुवर्ती, भावानुवर्ती व आचरणानुवर्ती ही बनना है।

(स्वामी गुरुराज द्वारा कुंडलिनी योग की प्रस्तावना दृष्टिकोण से उद्धृत तीसरा व अंतिम भाग)

गहरी-डुबकी

# स्वामी दयानंद की गुरुभक्ति

स्वामी विरजानंद की पुण्यकीर्ति सुनकर स्वामी दयानंद को उनके दर्शन करने की, आर्ष ग्रन्थों का अभ्यास करने व वैदिक रसामृत का पान करने की जिज्ञासा जागी। वे मथुरा में दंडी स्वामी विरजानंद की कुटिया पर जा पहुंचे। स्वामी विरजानंद का नियम था कि वह जिज्ञासुओं को पढ़ाने के बाद कुटी के द्वार बंद ही रखते थे। केवल दर्शनार्थियों से मिलना उन्हें बहुत कम पसंद था। स्वामी दयानंद ने द्वार खटखटाया तो स्वामी विरजानंद ने पूछा-कौन? स्वामी दयानंद ने विनम्र उत्तर दिया-मैं कौन हूं, यही तो जानने आया हूं। अंदर से दूसरा प्रश्न आया-कुछ अध्ययन किया है? स्वामी दयानंद ने सगर्व उत्तर दिया-हां, और जो-जो पढ़ा और लिखा उसका विवरण सुना दिया। पर दरवाजा अब भी नहीं खुला। स्वामी विरजानंद ने अंदर से ही कहा कि जो-जो पढ़ा है उसे इसी समय भुला दो। जब तक मनुष्य द्वारा प्रणीत ग्रंथों का तुम्हारे चित्त पर प्रभाव रहेगा तब तक तुम आर्ष ग्रन्थों के तत्वों को नहीं जान पाओगे। और हां, तुम अपने सब ग्रंथ जो तुमने लिखे हैं उन्हें भी यमुना नदी में डाल आओ। बड़े अभ्यास से पढ़ी गई विद्या को भुलाना और अत्यंत परिश्रम व साधना से लिखे गए ग्रंथों को फेंक देना बड़ा दुष्कर कार्य था। पर गुरु सन्निधि के उदात्त भाव के कारण स्वामी दयानंद ने वही किया जो स्वामी विरजानंद ने कहा। खाली और स्वच्छ मन लेकर वे पुनः गुरुद्वार पर पहुंचे। अब स्वामी विरजानंद की कुटी का द्वार खुल गया। सद्गुरु ने उन्हें अपना लिया। गुरुकृपा के कारण ही स्वामी दयानंद ने आर्ष ग्रन्थों से भ्रमजाल को तोड़ देने वाले सूत्र निकाले व उनका पुनर्लेखन किया। अपनी मान्यताएं त्याग कर गुरु आदेश का अक्षरशः पालन करते हुए गुरु प्रदत्त शाश्वत मान्यताओं को ग्रहण किया। नमन है उनकी गुरु महिमा को पहचानने वाली दृष्टि को।

॥卐॥

# ऊँची उड़ान

## साधकों के अनुभव



1. सुकृति गांगुली, ग्वालियर

### मेरा पहला अनुभव

मैं अपना एक अनुभव आप सबसे साझा करना चाहती हूं। घटना सन् 2005 की थी जब मैं और मेरी बहन पहली बार काशी शिवपुरी आश्रम आए थे। हमारे पास थोड़ा ज्यादा सामान था और उस समय यहां तक पहुंचने के लिए टुकड़े-टुकड़े यात्रा करते हुए आना पड़ता था। काशी शिवपुरी पहुंचकर प्रभु बा से मिलकर जब दो-चार दिन के बाद यहां से जब हम वापस जाने लगे। ज्यादा सामान होने के कारण प्रभु बा ने आश्रमवासी साधक ऋषि दादा से कहकर हमें सलूंबर से बस में बिठा दिया।

लेट होने के कारण स्थिति इस प्रकार हो गए की ट्रेन छूट जायेगी। लेकिन जब हम बस से उतरे, हमने देखा कि सफेद पोशाक में एक इंसान प्रकट हुए और हमारा सामान उठाकर हमें रेलवे स्टेशन के भीतर पहुंचाकर कोच तक सामान चढ़ाकर गए। जब हमने उनसे कहा भाई साहब आप छोड़ दीजिए हम कुली कर लेंगे, उन्होंने इशारा में होठों पर उंगली रख कर हमें चुप करवा दिया। हमें बहुत आश्चर्य हुआ ये कौन हैं जो हमें इस तरह से ट्रेन में बिठाकर और तत्काल दृश्य से ओझल हो गए। इस अलौकिक घटना के बाद ट्रेन तुरंत छूट गई। गुरुदेव ने जाने क्या व्यवस्था की! ॥卐॥

## एक अद्भुत अनुभव

यह वर्ष फरवरी 2007 की बात है, जब अचानक मेरी तबीयत खराब हो गयी, उस दिन हास्पीटल मे Admit होने के बाद गुरुदेव से संपर्क करने की कोशिश की गयी परन्तु सायंकालीन समय होने से संपर्क नही हुआ। तब तक डा. के द्वारा दवाइयां व Treatmant चालू कर दिया गया। दवाइयां लेने के लिए जब मेडिकल पर हमारे भाई साहब जा रहे थे, उस समय "स्वामी दादा" का फोन आता है। पूरी स्थिति से उन्हें अवगत कराने पर गुरुदेव का आदेश बताया कि सब ठीक हो जाएगा एवं बांसवाडा छोड कर कहीं नहीं जाना है।

भाईसाहब जब मेडिकल स्टोर पर दवाइयां ले रहे थे। तब हॉस्पिटल के पूर्व परिचित डाक्टर मिल जाते हैं। उन्होंने पूछा कि क्या हुआ, बताया कि भाई की तबीयत खराब हो गयी है। उन्होंने कहा 'मैं देखता हूं' दवाई बाद में लेना । उन्होने चेक कर पूरी दवाई का पर्चा बदल दिया। दूसरे दिन जब पहले के डाक्टर ने पर्ची देखी तो कहा कि आपको अहमदाबाद या बाहर कहीं ले जाओ। तभी ठीक होंगे। भाई साहब ने कहा कि हमारे गुरुदेव का आदेश है कि बांसवाड़ा छोड़ कर कहीं नहीं जाना है। स्वास्थ्य में सुधार होने पर 7 दिन में घर पर आ गये। उसके बाद पुनः गुरुदेव के बात करने का प्रयास किया। तब स्वामी दादा ने आदेश ले कर बताया कि 1 माह बाद में उदयपुर जब इच्छा हो तो बता देना । बाकी आवश्यक नहीं है। उन्ही दिनो में होली का त्योहार था उस दिन एक चिरपरिचित व्यक्ति घर पर आया। जिसको देवता का भाव आता था, उनकी भाषा Local वागडी ही थी।

उस दिन अचानक उनकी भाषा हिन्दी हो गयी। और मेरे

पिताजी को कहा कि सब बाहर हो जाओ। और नया कपडा, धोती, कांच, स्टील का बर्तन, कुंकुम, पानी मुझे दे दो। उस समय उनकी भाषा 'प्रभु' जैसी हो गयी थी। दर्पण में देखने के बाद कहा-सब ओके है, सब ठीक है, अब हम चलते हैं। उसके बाद वह व्यक्ति अपनी मातृमाषा मे बोलना चालू हो गया। उसके बाद उदयपुर जा कर बताया तो सभी Report Normal आई। यही गुरुदेव का आशीर्वाद एवं प्रसाद है। ॥卐॥

## 3. रजनी मिश्रा, कैलिफोर्निया

### सद्गुरु कृपा

कैलिफोर्निया में हर साल सद्गुरु आशीर्वाद से दत्त जयंती उत्सव मनाया जाता है। यह उत्सव एक मंदिर में होता है। कुछ वर्षों पहले की बात है जब साधकों की संख्या इतनी नहीं थी जितनी आज है। काम ज्यादा रहता था और काम करने वाले हाथ कम। इसलिए सब लोग पहले ही अपनी जिम्मेदारियां बांट लेते थे। प्रमुख कार्य होते थे-सत्संग, महाप्रसाद, साजसज्जा व स्वच्छता। सभी साधक 1 दिन पहले वहां जाकर साफ सफाई व सजावट करते थे और उत्सव की लगभग सारी तैयारियां सुनिश्चित कर लेते थे। उस साल जब साफ सफाई, व्यवस्था आदि का कार्य करके घर आई तो रात को ऐसी हालत हो गई कि ना तो मुंह से आवाज निकल रही थी और न शरीर ठीक लग रहा था। बुखार भी तेज चढ़ आया था और शरीर नि:शक्त सा लग रहा था। अपने हाल की चिंता कम थी पर दूसरे दिन दत्त जयंती उत्सव कैसे मनेगा यह चिंता ज्यादा थी। घर से बहुत सारा सामान ले जाना था, जो सजावट में कमी थी उसे पूरा करना था, सत्संग में भी बैठना था और महाप्रसाद बनाने, जमाने में

भी सेवा देनी थी। अब क्या होगा? सहसा मुझे कुछ सूझा और आसन लगाकर ध्यान के लिए बैठ गई। आसन पर बैठते ही गुरुदेव से निवेदन किया कि शरीर तो जवाब दे रहा है कल कैसे होगा? वैसे तो सब आप ही संभालते हो पर इस विकट घड़ी में विशेष रूप से आपको ही संभालना है। करीब 5 मिनट बाद मेरे ललाट पर ठंडी हवा महसूस होने लगी। ऐसा लगा कि सद्गुरु पास से गुजरे हैं। यह स्थिति कितनी देर रही बाद में यह तो भान नहीं रहा पर जब 1 घंटे बाद मेरा ध्यान पूरा हुआ तो लगा कि मैं तो बिल्कुल ठीक हूं। मुझे तो कुछ भी नहीं हुआ है। मुझ में नई ऊर्जा का संचार हो गया था। मैं सब काम कर लूंगी। ऐसी स्थिति आते ही मैंने गुरुदेव को बारंबार धन्यवाद दिया। उनकी ऊर्जा को, उनकी कृपा को अनुभव करके मैं तो धन्य हो गई। ॥卐॥

# शब्दों की माला

*( साधकों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति )*

1. प्रशांत खानवलकर, ग्वालियर

## सद्गुरु का आशीष

जीवन की उमस से मिटी अब तपिश है
अमृतमयी बूंदों सी धरा पर बरसती है
नितांत नीरवता में कूक सी कुहकती है
आज मेरे ध्यान के आंगन में बारिश है ।
ये मेरे सदगुरु का आशीष है ।

चहुं ओर बिखरी हुई मुग्ध खुशबू है
कभी हरसिंगार सी, कभी मोगरे सी
कभी चंपा सी तो कभी रातरानी सी
निरंतर महकती निर्लिप्त कशिश है ।
ये मेरे सदगुरु का आशीष है ।

उमड़ घुमड़ मेघ आच्छादित
गगन में  सुदूर विचरते
विविध विहंगम विहग है
धरा पर अपनी अद्भुत आभा बिखेरता
सुंदर इंद्रधनुषी आभायमान आकाश है ।
ये मेरे सदगुरु का आशीष है ।

ध्यान की अविरल धारा से
प्रस्फुटित मन के तम को हरता
अनंत प्रकाश है खुशनुमा बयार है,
बरसती फुहार है
निमग्न मन मयूर नृत्य को विवश है ।
ये मेरे सदगुरु का आशीष है ।।

॥卐॥

2. रेणु रंजन गिरि, मुजफ्फरपुर

# श्रद्धा सुमन चढ़ाऊँ मैं

कर त्याग विकार अपने मन से, श्रद्धा सुमन चढ़ाऊँ मैं।
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, नित-नित शीश झुकाऊँ मैं ।।

गुरुदेव हमारा, सबसे प्यारा, जग में निराला है।
जिस माथ पड़े कर उनका, जीवन उसका उजाला है।

गुरु ज्ञान की नित आभा पाकर, अपना मान बढ़ाऊँ मैं।
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, नित-नित शीश झुकाऊँ मैं।।

गुरु ज्ञान का वो सूत्र पिलाते, जो सबसे आला है।
कर ध्यान ऊर्जा से दूर, मन पर पड़ा जो जाला है।।

गुरुवचन का नित पालन करके,जीवन सरल बनाऊँ मैं।
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, नित-नित शीश झुकाऊँ मैं।

था जंग पड़ा बुद्धि तल पर, जिसे तराश निखारा है।
दे ध्यान मार्ग की दीक्षा, साधक जीवन सँवारा है।।

जप-ध्यान को सादर अपनाकर, सोया भाग जगाऊँ मैं।
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, नित-नित शीश झुकाऊँ मैं ।।

कर त्याग विकार अपने मन से, श्रद्धा सुमन चढ़ाऊँ मैं।
गुरुदेव तुम्हारे चरणों में, नित-नित शीश झुकाऊँ मैं ।।

॥卐॥

3. रेणु कौशिक, कैलिफोर्निया

# मन के भाव

गुरुदेव हमारे वो हैं जीवन के पालन हारे
वो ही हैं हमारे सांसो के धागे
हर घड़कन में बसे हैं वो हर एक पल
वो ही हैं हमारे चाँद और सितारे
सासों में बसे हैं और दिल में धड़कते हैं
सूरज की तरह वो दिन में चमकते हैं
ब्रह्म भी वो हैं और ब्रह्माण्ड भी वो हैं
चारों तीर्थों के धाम भी वो हैं
ममता की मूरत और करुणा की सूरत हैं
जलती रहे जो हमेशा वो प्रेम की ज्योति हैं
खुद को कष्ट दे कर मुस्कुराते रहते हैं
अपने शिष्यों को कष्ट से बचाते रहते हैं
शत्-शत् प्रणाम करते हैं गुरुदेव आपको
हमने जिंदगी सौंप दी है आपको
आप ही हैं बस जिंदगी का सहारा
और कोई नहीं है दूजा हमारा
इतनी खुशियाँ दी हैं कि झोली में ना समाय
खुशी से इन आँखों से आँसू ना निकल जाय

॥卐॥

# रचनात्मकता का आनंद

## ( साधकों द्वारा निर्मित भावकृतियां )

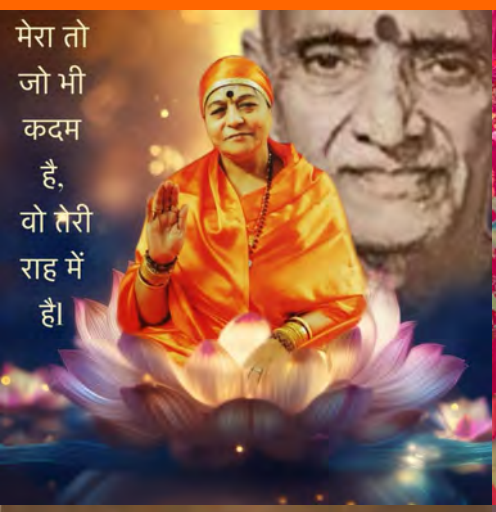
मेरा तो
जो भी
कदम
है,
वो तेरी
राह में
है।

गुलों को खुशबू ही नहीं,
मुस्कान भी मैं ही देता हूँ।

सद्गुरु- कृपा का प्रसाद मिलेगा, तो सहस्त्र दल कमल खिलेगा।

नयनों मे हो तुम्हारा दर्शन,
सद्गुरु कृष्ण! तुम्हे है वंदन।
जय श्री कृष्ण।

गुरुदेव,
जब भी आपकी याद आती है,
हम अपने दिल पर हाथ रख लेते है,
क्योंकि हमें पता आप कहीं मिलो
या ना मिलो, यहां जरूर मिलोगे...

जब से मन गुरु में रमा, थमा बाहरी शोर।
अंतर में होने लगा, उज्ज्वल-सा अब भोर।।

# सम्मतियां

## बात कहां तक पहुंची

विजय बुधिया, रायपुर

इस माह की शिव गरिमा में तो सद्गुरुदेव ने अपना दिल खोल कर साधक के सामने रख दिया है, आश्रम में मनाए जाने वाले हर उत्सव के पीछे भी गुरुदेव का एक ही लक्ष्य होता है , साधकों का जुड़ाव, साधकों की साधन संपन्नता एवं क्षमता बढ़ाना, साधकों में प्रेम एवं आपसी समझ को बढ़ाना, यानी हर उत्सव भी सिर्फ और सिर्फ अपने साधक के सुखद जीवन को ही समर्पित है।और हम साधकों की आदत होती है, हम वर्ष के एक या दो उत्सव में शामिल होने का नियम बना कर रखते हैं, और सभी उत्सव में समिल्लित न होने की कोई न कोई ठोस वजह भी ढूंढ कर रखते हैं, वहीं सद्गुरु की इच्छा रहती है कि मेरा हर एक साधक हर एक उत्सव में शामिल हो, क्योंकि हर उत्सव में गुरुपरंपरा, बड़े गुरुदेव, एवं प्रभु खुश होकर जो भी आशीर्वाद स्वरूप बांटते हैं वो मेरा एक एक साधक ग्रहण करे, हम समझ ही नहीं पाते कि हमने एक बार भी न आकर क्या क्या खो दिया। ॥卐॥

# सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव का निमंत्रण

सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव एक सनातन परंपरा का उत्सव है। अपने परिजन, विशिष्टजन या गुरुजन के 1000 माह के सफल जीवन के बाद उल्लासस्वरूप इसे मनाया जाता है। इसमें उनके शेष जीवन के लिए आरोग्य व सर्वसुखों की कामना की जाती है। आध्यात्मिक दृष्टि से इसका महत्व यह है कि 1000 से अधिक चंद्रदर्शन कर लेने वाला सद्गुरु अनुभव, ज्ञान व लोक कल्याणकारी कार्यों का भंडार बन चुका होता है। उन उपलब्धियां से कुछ सीखना, उनको सर्वसम्मुख करना तथा उनमें और समृद्धि हो ऐसी कामनाएं ही उत्सव के मुख्य हेतु हैं। अपनी गुरु परंपरा में परमपूज्य गुलवणी जी महाराज व परमपूज्य नारायण काका ढेकणे का यह उत्सव हुआ है। हमारे सद्गुरु राजयोगी प्रभु बा का 1008 चंद्रदर्शन का सहस्र चंद्रदर्शन महोत्सव 15 नवंबर 2024 को आयोजित होगा। इसके अंतर्गत 7 नवंबर से 14 नवंबर तक अखंड नाम साप्ताहिकी, 9 नवंबर से 13 नवंबर तक शिवशक्ति यज्ञ (शतरुद्री व शतचंडी) संपन्न होंगे। 13 नवंबर को यज्ञ की पूर्णाहुति व दीपदान होगा 14 नवंबर को पालकी यात्रा का आयोजन है। 15 नवंबर को दत्तयाग व श्री गुरु महाराज की मूर्ति की राजसी पूजा होगी। 15 नवंबर को ही मुख्य समारोह में सद्गुरु राजयोगी प्रभु बा का तुलादान, उन्हें मान पत्र अर्पण, सहस्र चंद्रदर्शन विशेष पूजा व संतो के आशीर्वचन, साधकों की शुभकामनाएं प्रदान करने के कार्यक्रम होंगे। इन सभी अवसरों पर आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है। कृपया इस अभूतपूर्व एवं विलक्षण अनुष्ठान में सम्मिलित होकर अपनी प्रत्यक्ष शुभकामना दर्ज करावें।

निवेदक : एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट, काशी शिवपुरी आश्रम। ॥ 卐 ॥

# आपकी सहभागिता आमंत्रित

आपको अपने केन्द्र के व्हाट्स एप ग्रुप से हर महीने 'शिव गरिमा ' पत्रिका मिल रही होगी और आप पढ़ भी रहे होंगे। यह पत्रिका अपने आश्रम, शक्तिपात परंपरा व गुरुदेव को समझने में सहायक है। इसलिए वासुदेव कुटुंब के हरेक सदस्य को इसे देखना चाहिए। आपसे निम्नलिखित प्रकार से भागीदारी अपेक्षित है-

1. यदि आपको किसी कारण से यह पत्रिका नहीं मिलती है तो आप इसकी प्रति व स्वर रूप स्वामी गुरुराज से मंगवा सकते हैं। 2. आप इसे पढ़ सुनकर अपनी प्रतिक्रिया अवश्य दें। 3. आप अपना अनुभव, जिज्ञासा आदि भी भेज सकते हैं। 4. साधकों के लिए काव्य व मीम्स के लिए भी प्रकाशन की व्यवस्था है। आप साधना, गुरुदेव या आध्यात्मिक विषयों पर ये बनाकर प्रकाशन के लिए भेज सकते हैं। 5. भविष्य में और क्या जोड़ा जा सकता है, यह सुझाव दे सकते हैं। 6. अपने साथी साधकों को इसे पढ़ने, सुनने के लिए प्रेषित कर सकते हैं। 7. शिव-गरिमा पत्रिका में वर्णित विचार व सिद्धांत वासुदेव कुटुंब की मान्यता के अनुसार हैं तथा प.पू. प्रभु बा से दीक्षित साधकों के लिए ही संदेश के उपयोग हेतु हैं। 8. इस पत्रिका की अपने स्तर पर प्रिंट निकाल सकते हैं। विशेष रूप से केन्द्र संचालक एक प्रति केन्द्र पर अवश्य रखें । 9. इस पत्रिका में प्रकाशित फोटो का उपयोग कृपया अन्यत्र बिना अनुमति के न करें। आशा है यह बात यथाभाव आप तक पहुंचेगी ।

केंद्र संचालकों के लिये निर्देश - हर महीने शिव गरिमा का डिजीटल प्रकाशन हो रहा है। उसकी ऑडियो/विडियो फाइल भी आपको भेज रहे हैं। आप सभी केंद्र संचालकों को निर्देश है कि आप अपने शहर अथवा आश्रम में होने वाले मासिक अखंड नाम संकीर्तन के पूर्णाहुति के पश्चात इसे ऑडियो/विडियो सिस्टम पर सभी साधकों को सुनाएं। अगर आपके शहर/ गाँव मे नियमित जाप नहीं हो रहा तो आप अपने केंद्र पर सत्संग के पश्चात् भी इसे सुना सकते हैं। इस प्रक्रिया को हमें हर माह के हर अंक के प्रकाशन के बाद करना है। जयश्रीकृष्ण। -स्वामी हृदयानंद

एकता ध्यान योग एवं सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित
काशी शिवपुरी आश्रम, ईंटालीखेड़ा, तहसील-सलुम्बर, जिला-सलुम्बर ( राज. )
से प्रकाशित 'शिव-गरिमा' ई-मासिकी, निः शुल्क

संपादक : स्वामी गुरुराज
मार्गदर्शक : गुरुपुत्र दत्तप्रसाद एवं स्वामी हृदयानंद ( स्वामी दादा )
ग्राफिक्सः प्रमोद सोनी, स्वरः संजय शुक्ला, ध्वनि संयोजनः विजय पांडे

संपर्क सूत्र -आश्रम : 9929681423
स्वामी दादाः 9950502409 स्वामी गुरुराज : 9414740814, 8302694012

शिव गरिमा के सभी
pdf और audio files के लिए
QR Code Scan करें

www.prabhubaa.com,
Prabhu Baa App